ओ३म

ब्रह्म यज्ञः (वैदिक सन्ध्योपासना)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म

ब्रह्म यज्ञः (वैदिक सन्ध्योपासना)

सन्ध्या शब्द का अर्थ

भली-भाँति ध्यान किया जाए परमेश्वर का जिसमें, वह सन्ध्या है।

-पञ्चमहायज्ञविधि

सन्ध्या करने का समय

रात और दिन के संयोग-समय दोनों सन्ध्याओं में सब मनुष्यों को परमेश्वर की स्तुति और उपासना करनी चाहिए।

॥ अथ गायत्री-मन्त्रः ॥

(देवता-सविता=जगदुत्पादक ईश्वर)

ओ३म् भुर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। (यजु० 36। 3), (ऋ०3 । 62 । 10)

ओ३म्। हे प्राण-स्वरूप, दु:ख-विनाशक और आनन्द-स्वरूप भगवन्! हम सब उस जगत् उत्पादक, वरण करने योग्य दिव्य गुणों से युक्त परमेश्वर का ध्यान करें अथवा अपनी आत्मा में धारण करें, जिससे कि वह परमेश्वर हमारी बुद्धियों को उत्तम कामों में प्रेरित करें।

Aum is cause of our very existence, the shedder of miseries and the showerer (imparter) of happiness (Bliss). He is the most acceptable and the most worth-knowing. We should remember him. May he always inspire our intellectual faculties and lead them on to do only what is good.

॥ अथाचमनमन्त्रः॥

ओ३म्। शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शँयोरभिस्रवन्तु नः॥ यजु० 36 । 12

ओ३म्। सर्व-प्रकाशक, सुख-शान्ति दायक सर्वव्यापक देव! आप हम पर सब प्रकार की सुख शान्ति की वर्षा करें तथा हमें मनोवांछित पूर्ण सुख शान्ति को प्राप्त करें।

Aum. May the gracious, Omnipresent, Omnipotent and glorious God bestow blessings upon us and may God lead us to our desired goal of attaining perfect peace.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

May the Omnipotent God, the illuminator of and the Bestower of bliss upon all, be so gracious as to shower the prosperity and happiness desired by us in our earthly life and also the perfect bliss of final emancipation.

।।अथेन्द्रियस्पर्शमन्त्राः।।

ओ३म्-वाक् वाक्। ओ३म्-प्राणः प्राणः।
ओ३म्-चक्षुश्चक्षुः। ओ३म्-श्रोतं श्रोत्रम्।
ओ३म्-नाभिः। ओ३म्-हृदयम्।
ओ३म्-कण्ठः। ओ३म्-शिरः।
ओ३म्-बाहुभ्यां यशोबलम्।
ओ३म्-करतलकरपृष्ठे।

ओ३म्। हे ईश्वर! हमारी समस्त इन्द्रियाँ-वाणी, प्राण, नेत्र, कान, नाभि, हृदय, कंठ, सिर, बाहें, हाथ और हथेली सब बलवान हों और ये सब हमारी कीर्ति एवं ऐश्वर्य का कारण बनें।

Aum. Oh Alimghty God, we pray vitality and glory to our sense organs i.e. tongue, respiratory system, eyes, ears, nasal, heart, throat, head, arms and palms.

।। अथेश्वरप्रार्थनापूर्वकमार्जनमन्त्राः।।

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि। ओ३म् भुवः पुनातु नेत्रयोः।
ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे। ओ३म् मंहः पुनातु हृदये।
ओ३म् जनः पुनातु नाभ्याम्। ओ३म् तपः पुनातु पादयोः।
ओ३म् सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि। ओ३म्खम्ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।

ओ३म्। हे ईश्वर! आप प्राणदाता हैं। आप हमारे सिरों में (बुद्धियों में) पवित्रता दीजिए। हे सुखदाता आनन्द स्वरूप प्रभु! आप हमारी आंखों में पवित्रता एवं कंठ में मधुरता दीजिए। हे महान् पूजनीय प्रभु! हमारे दिलों में पवित्रता एवं महानता प्रदान करें। हे जगत् उत्पादक प्रभु! हमारी नाभियों में और पैरों में पवित्रता एवं सन्मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करें। हे सत्यमय एवं सर्वव्यापक प्रभु! आप हमारे अंग प्रत्यंग में तथा सर्वत्र पवित्रता प्रदान करें।

Aum. O the Creator of the universe, purify our head and bless it with clarity of thoughts. O the Blissful, bless us with clear vision in our eyes and purity & sweetness in our throat. May the Great Lord

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

purify our hearts. May the Maker of all things purify my nasal. May the stern and righteous Lord grant us strength in our feet. Once again we pray to the truthful God to purify our heads. May the All-pervading Lord purify us from end to end i.e. parts of our body and all places.

।। प्राणायाम मन्त्राः।।

ओ३म् भूः। ओ३म् भुवः। ओ३म् स्वः। ओ३म् महः।
ओ३म् जनः। ओ३म् तपः। ओ३म् सत्यम्।। तैत्ति०प्र 1/27

ओ३म्। हे प्रभु! आप जीवन दाता, दुःख विनाशक, आनन्द दाता, सबसे महान्, सबके उत्पादक, न्याय स्वरूप तथा सत्य स्वरूप हैं।

Aum. O God–Creator of life ! The Shedderer of all miseries ! O God of happiness ! O the greatest of all, Maker of all. Stern in justice and truth.

।। अथाघमर्षण मन्त्राः।।

ओ३म्। ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः ।।1।।

ओ३म्। उस भगवान् की महिमा से प्राकृतिक, नैतिक एवं सामाजिक नियम, उत्पत्ति, प्रलय, रात्रि और फिर जलमय सागरों की रचना की गई।

Aum. Absolute truth and relative truth, creation and dissolution came into existence through the glory of God, and then night and all oceans were produced.

ओ३म्। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।। 2।।

ओं३म्। जलमय समुद्रों की रचना पश्चात् उस शासक प्रभु ने समय विभाजन किया और फिर सालों, दिनों और रात्रियों की रचना की।

Aum. After creating the seas and oceans, the Ruler of the universe divided time and then produced Years, Days and Nights without effort.

ओ३म्। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्ष मथो स्वः।।३।।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म्। उस रचयिता ने पहिले की भाँति सूर्य, चन्द्रमा, आकाश, पृथ्वी और अन्तरिक्ष को फिर रचा।

Aum, the Maker, formed as before, the Sun, the Moon, the Sky, the Earth and Space.

॥ अथाचमनमन्त्राः ॥

ओ३म्। शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शँयोरभिस्रवन्तु नः॥

ओ३म्। सर्व-प्रकाशक, सुख-शान्ति दायक सर्वव्यापक देव! आप हम पर सब प्रकार की सुख शान्ति की वर्षा करें तथा हमें मनोवांछित पूर्ण सुख शान्ति को प्राप्त करें।

May the All-pervading Divine Mother, be gracious enough to gratify our inner craving and shower blessings all around us.

॥ अथ मनसापरिक्रमामन्त्राः ॥

ओ३म्। प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो
नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं
वो जम्भे दध्मः ॥1॥

ओ३म्। पूर्व दिशा का अधिपति, प्रकाशक, नायक ज्ञानदाता अग्निदेव सूर्य के रूप में विराजमान है जो अपनी किरण रूपी बाणों से हमारी रक्षा करता है। दिशा के स्वामी, रक्षक तथा उसके साधनों को हमारा नमस्कार होवे। जो हमसे द्वेष करता है या हम किसी से द्वेष करते हैं उस व्यक्ति को हे भगवान्! हम आपके न्याय पर छोड़ते हैं।

Aum. Agni, the eternal source of continuous progress, is always before us in the East in the shape of the Sun. The rays of the sun are its arrows to protect us. We adore you, O Agni, in gratitude for thy kind rule, kind protection and blessed gift of life. O God! we humbly thank thee, and place him, who hates us, or whomever we hate at thy disposal.

ओ३म्। दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥ 2॥

ओ३म्। (यजमान) अपने दाहिने हाथ अर्थात् दक्षिण दिशा की ओर ईश्वर को इन्द्र के रूप में देखता है जो धन-ऐश्वर्य का स्वामी है और दुष्ट लोगों से हमारी रक्षा करता है आप विद्वानों की लक्ष्य-प्राप्ति में मार्ग दर्शक हैं। हम इस दिशा के स्वामी, रक्षक तथा उसके साधनों को बारम्बार नमस्कार करते हैं। हम अपने पारस्परिक द्वेष भाव को

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

आपके न्याय पर छोड़ते हैं।

Aum. Indra, Tho art to our right in the South. You protect us from crooked and wicked people. You are the suppressor of evil forces and the learned elders are the providers of the strength to achieve our goals. We submit to turn those whom we hate and leave these to thy justice who hate others.

ओ३म्। प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो
नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥३॥

ओ३म्। पश्चिम दिशा के स्वामी वरुण आप सर्वश्रेष्ठ हैं। आप भयानक एवं निष्ठुर प्राणियों से हमारी रक्षा करने वाले हो। हम अपने रक्षक का ध्यान एवं उपासना करते हैं। हमारा उसको बारम्बार नमस्कार हो। हम अपने पारस्परिक द्वेष भाव को आपके न्याय पर छोड़ते हैं।

Aum. May Varun, the supreme lord of the West, protect us from curel and dangerous people. Thou createst food which gives us life on earth. We adore Varuna who is controller and protector of the universe. We leave all our ill-feelings among us at your command.

ओ३म्। उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो
नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥4॥

ओ३म्। हे उत्तर दिशा के स्वामी, सुख-शान्ति दाता सोम देव! आप हम पर सुख शान्ति की वर्षा करें। हे सोमदेव! हम कुकर्मो एवं बुराइयों से सदैव दूर रहें। संसार के रक्षक व धारक सोम रूपी प्रभु की हम स्तुति करते हैं। हम आपका ध्यान एवं बारम्बार नमस्कार करते हैं। हम अपने शत्रुओं को तथा अपने शत्रुभाव को आपके न्याय पर छोड़ते हैं।

Aum. O Soma, the Lord of the North, the showerer of peace and calmness, we pray to bestow peace upon us. The desire to rise higher like flames are means to attain glory in life. We worship Soma, the protector and controller of the universe. We leave all those who are inimical to us and whom we hate to thy justice.

ओ३म्। ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरूध
इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥ 5॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म्। नीचे की दिशा के स्वामी विष्णो! आप ध्रुव एवं निश्चल हैं। हम आपसे धैर्य एवं दृढ़ता की कामना करते हैं। जिस प्रकार आप पेड़ पौधों से हमारी रक्षा करते हैं उसी प्रकार हम भी प्राणिमात्र का भला करें। संसार के रक्षक पोषक विष्णो! हम आपकी स्तुति एवं उपासना करते हैं। हम अपने सामाजिक द्वेषभाव को आपके न्याय पर छोड़ते हैं।

Aum. O All pervading Vishnu, we worship you for your stability and firmness. The pious and omnipresent God is the Lord here, the nourisher of our life with trees and plants, adviser of good deeds and is our protector. We worship you again and again. We leave all our ill feelings among us for your justice.

ओ३म् ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं
द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।। 6।।

ओ३म्। हे सबके स्वामी, रक्षक बृहस्पति देव! आप वर्षा रूपी बाणों से हमारी रक्षा करते हो। आपकी ज्ञानरूपी वर्षा हमारे मन का अन्धेरा मिटाता है। हे रक्षक धारक बृहस्पति! हमारा नमस्कार आपको बारम्बार हो। हम अपने शत्रुता भाव को आपके न्याय व दया पर छोड़ते हैं।

Aum. O Brhaspati, you are the Lord of us all. You are our saviour. Rain is your arrow. You remove our ignorance with the shower of knowledge. We bow before you again and again. We leave all including ourselves who have grudge for your judgement.

।।अथोपस्थानमन्त्राः।।

ओ३म्। उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवन्देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरूत्तमम् ।। 1।। यजु० 35/14

ओ३म्। हे ज्योति स्वरूप सूर्य। आप सारे संसार में रमे हैं। आप ज्ञान एवं कल्याण के भण्डार हैं। आप सब ज्योतियों की ज्योति हैं। आप सर्वोपरि हैं। हम उस ज्ञान-ज्योति के लिए आपकी उपासना करते हैं।

Aum. The Sun is pervading the whole world with its light. May we rise above the veil of darkness and ignorance and behold thy brilliance and bliss. The sun is the greatest and the best among all.

ओ३म्। उदुत्यञ्जातवेदसं देव वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ।। 2।।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म्। हे सूर्य! आप ज्ञान ज्योति के स्रोत हैं। आप इस विश्व की सम्पूर्ण ज्योतियों की ज्योति हैं। हम विश्व की प्रत्येक वस्तु में आपकी महानता को देखते हैं। हम उस ज्ञान ज्योति हेतु आप का ध्यान करते हैं। अथवा संसार के समस्त पदार्थ अपने भिन्न-भिन्न रचनादि गुण रूपी पताकाओं द्वारा सर्वज्ञ और चराचर के स्वामी ईश्वर की सत्ता का भान कराते हैं।

Aum O God, really you are the revealer of the Vedas, possessor of supernatural character and establisher of distinctive attributes which act as sign-posts (flags) and show the soul of the universe.

ओ३म्। चित्रन्देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षँसूर्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।। 3।। 7/42

ओ३म्। हे ईश्वर! आप अद्‌भुत स्वरूप एवं महानतम हैं। आपकी महानता सूर्य, जल एवं अग्नि में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। आपकी शोभा पृथ्वी, आकाश एवं अन्तरिक्ष में सदैव विद्यमान है। आपकी महिमा जड़ एवं चेतन सभी में प्रकट होती है। हे संसार के जीवनदाता प्रभु! आप हमारे हृदयों में यथावत् प्रकाशित रहें।

Aum O God! Thou art wonderous, the ever-wakeful Eye, and the support of all the heavenly bodies, even the sun, the moon and fire. You hold the heaven, and the earth and space. Your glory is revealed in every creation of the world. Thou art the soul of all the moveable and unmoveable objects. May we act, think and speak rightly.

ओ३म्। तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः
शतञ्जीवेम शरदः शतंश्रृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम
शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात्।। 4।। यजु० 36/24

ओ३म्। ईश्वर सृष्टि की रचना के पूर्व विद्यमान था। वह सर्व द्रष्टा और सर्वज्ञ है। वह शुद्ध पवित्र हितकारी है। उसकी कृपा से हम सौ वर्ष तक जीवित रहें। सौ वर्ष तक सुनते रहें और सौ वर्ष तक बोलने की शक्ति रहे। सौ वर्ष से भी अधिक समय तक देखते, सुनते, बोलते तथा पराश्रित न रह कर जीवन व्यतीत करें।

Aum, O Thou, the seer of all, benefactor of righteous and learned, and the maker of the Universe, your were present even before the creation of the universe. You are Auspicious and Supreme. May we see a hundred autumns (years). May we live, hear and speak a hundred autumns and even more than hundred years without being (burden) dependent on any one.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

॥ अथ गुरुमन्त्रः॥

**ओ३म्। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥5॥ यजु० 36।3**

ओ३म्। हे सच्चिदानन्द! पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा द्युलोक के स्वामिन्! आप प्राण स्वरूप, दु:खहर्ता एवं आनन्द स्वरूप हो। आप कृपया हमारी बुद्धियों को उत्तम गुण, कर्म तथा स्वभावों की ओर प्रेरित व प्रवृत करें।

Aum. Om is the cause of our very existence and dearer to us than our life itself, wiper of all our pains and sorrows and Bestower of happiness. Thou art our god who alone art to be adored and worshipped. There is none beside. We should meditate upon you the most acceptable and the most knowledgeable God. May that imparter of bliss, inspire and lead our intellects.

॥ अथ समर्पणम् ॥

**हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयानेन जपोपासनादिकर्मणा
धार्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।**

हे करुणामय प्रभु! आप की असीम कृपा से इस जप और उपासनादि कार्य से हमें तुरन्त धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष रूप चतुर्वर्ग की सिद्धि प्राप्त हो।

Aum. O the compassionate God, the Infinite Fount of mercy, by thy grace whatever good deed done by us, and this performance of our devotional exercise of the recitation of the texts of the holy Vedas, Thy adoration and other acts, we whole-heartedly offer to thee, may we with your blessings, attain Dharma, Artha, Kama and Moksha.

॥ नमस्कार-मन्त्रः॥

**ओ३म्। नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥ यजु०16/41**

ओ३म्। मोक्ष स्वरूप ईश्वर को नमस्कार। सांसारिक सुख देने वाले प्रभु को नमस्कार। आनन्द देने वाले प्रभु को नमस्कार और अत्यंत कल्याणकारक ईश्वर को हमारा बारम्बार नमस्कार होवे।

Aum. We bow to Thee and thank the Compassionate God, the Giver of happiness, the Blissful God, the Auspicious God. We pray and thank the Giver of perfect peace and tranquillity.

॥ इति सन्ध्योपासना विधिः ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

समर्पण

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता
शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे।। अथर्व 20 । 108 । 2

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव देव।।

हे परमात्मन्! आप ही हमारे माता-पिता हैं। आप ही हमारे भाई और मित्र हैं। विद्या और धन वैभव भी आप ही हैं। आप ही हमारे सर्वस्व और पूजनीय देव हैं।

O Lord! Thou art our Mother and Father, thou art our Brother and Friend, Thou art our Knowledge and Wealth. Thou art everything to us. O Supreme Lord.

नमस्ते सतेते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्व लोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैत तत्त्वाय मुक्ति प्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय।।

जगत् के उत्पन्न करने वाले सत्स्वरूप परमात्मा आपको हमारा नमस्कार है। सब को आश्रय देने वाले ज्ञानी प्रभु आपको नमस्कार है। दुःखों से छुड़ाने वाले अद्वितीय देव आपको नमस्कार है। हे अविनाशी सर्व व्यापक ब्रह्मन्! आपको हमारा नमस्कार हो।

Salutations to that Being the cause of the universe; Salutation to that Consciousness the support of all the worlds; Salutation to that One Truth without a second which gives liberation; Salutation to that Eternal Brahma who pervades all regions.

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं, वरेण्यं त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम्।
त्वमेकं जगत्कर्तृपातृप्रहर्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ।।

हे परमात्मन्! आप ही हमारे आश्रय हैं, आप ही प्राप्त करने योग्य हैं। आप ही जगत् के एक मात्र पालक हैं। आप स्वयं प्रकाशमान हैं। आप ही जगत् के उत्पन्नकर्ता, पालनकर्ता और नाशकर्ता हैं। आप महान् हैं, स्थिर हैं और निर्विकार हैं।

Oh Thou my only Refuge: Oh Thou my one Desire: Oh Thour the one Protector of the World, the Radiant One. Thou the sole Creator, Sustainer and Dissolver of the world. The one Great Motionless Being free from change.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

वयं त्वां स्मरामो वयं त्वां भजामो, वयं त्वां जगत्साक्षिरूपं नमामः।
सदेकं निधानं निरालम्बमीशं, भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः॥

हे परमात्मन्! हम आपका स्मरण करते हैं, आपकी ही स्तुति गाते हैं। जगत् के साक्षी रूप आपको हम नमस्कार करते हैं। हे जगदाधार प्रभु! आप किसी की सहायता के बिना स्वयं स्थित हैं। इस संसार रूपी समुद्र से पार लगाने वाली आप नाव हैं। हम आपकी शरण में आते हैं।

Oh Thou Eternal Witness of the Universe! We meditate on the One Truth and silently we adore thee and offer our salutation. We take refuge in that one Being–the basis of everything, self-supporting and supreme, a vessel in the sea of life.

ओ३म् असतो मा सद्गमय। ओ३म् तमसो मा ज्योतिर्गमय।
ओ३म् मृत्योर्माऽमृतं गमय।

ओ३म्। हे परमात्मन्! आप हमें असत्य से हटाकर सत्य मार्ग पर ले जाइये। अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाइये। मृत्यु से अमरता की ओर ले जाइये।

Aum. O Supreme Spirit! Lead us from untruth to truth. Lead us from darkness to light. Lead us from death to immortality.

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुखभाग्भवेत्।

ओ३म्। हे परमात्मन्! इस संसार के सभी प्राणी सुखी रहें। सब निरोग रहें। सब का कल्याण हो, संसार में कोई भी दुःख न पाये।

****

ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना के मन्त्रों का अनुवाद

"स्तुति से ईश्वर में प्रीति; प्रार्थना से निरभिमानता और उपासना से परब्रह्म से मेल होता है।"

(स्वामी दयानन्द सरस्वती)

"Stuti or Appreciation creates love for God, Prarthana or prayer brings about humility, Upasana or communion leads to God-realisation"

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

॥ अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनाः मन्त्राः ॥

ओ३म्। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद भद्रन्तन्न आ सुव ॥1॥ यजु० 30।3

तू सर्वेश सकल सुखदाता, शुद्ध-स्वरूप विधाता है,
उसके कष्ट नष्ट हो जाते, जो तेरे ढिग आता है।
सभी दुर्गुणों दुर्व्यसनों से हमको नाथ! बचा लीजे,
मंगलमय गुण-कर्म पदारथ, प्रेम सिन्धु! हमको दीजे॥

ओ३म्। हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता समग्र ऐश्वर्यों व सुखों के दाता सर्वशक्तिमान सविता देव! आप कृपा करके हमारे दुर्गुण, दुर्व्यसन, दुर्दिनों एवं दुःखों को दूर कर दीजिए और जो कुछ अच्छा और कल्याणकारक है वह हमें प्राप्त कराइए।

Aum. O God Almighty, the Creator of the Universe and Dispenser of all happiness! We pray Thee to dispel (wipe off) all our bad habits, bad deeds and calamities and bestow upon us what is blessed, good, auspicious and beneficial.

ओ३म्। हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥2॥ यजु० 13।4

तू ही स्वयं-प्रकाश सुचेतन, सुख स्वरूप शुभ त्राता है,
सूर्य-चन्द लोकादि को तू रचता और टिकाता है।
पहले था, अब भी तू ही है, घट-घट में व्यापक स्वामी,
योग, भक्ति, तप द्वारा तुझको पावें हम अन्तर्यामी॥

ओ३म्। हे सर्वव्यापक उत्पत्तिकर्ता प्रकाशक प्रभु! आप ही ने प्रकाश करने वाले सूर्य चन्द्रादि को रचा एवं धारण किया है। इस धरती एवं आकाश को आप ही धारण कर रहे हो। आप जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व भी वर्तमान थे। हमें उसी सुखस्वरूप भगवान् की उपासना करनी चाहिए।

Aum. Oh the all pervading God, the Creator and Supporter of the earth and heaven, all luminous bodies like the Sun, the Moon. Thou art the master of whole Universe. Thou existed before creation. We should with fervent devotion, adore you.

ओ३म्। य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 3॥ यजु० 25 । 13

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तू ही आत्मज्ञान बल-दाता, सुयश विज्ञजन गाते हैं,
तेरी चरण-शरण में आकर, भव सागर तर जाते हैं।
तुझ को ही जपना जीवन है, मरण तुझे बिसराने में,
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु! तुझसे लगन लगाने में।।

ओ३म् जो आध्यात्मिक एवं शारीरिक बल देने वाला है सम्पूर्ण विश्व प्रभु की उपासना करता है जिसकी शरण से सुख और मोक्ष मिलता है। उसके आश्रय के बिना अज्ञान, दुःख एवं मृत्यु है। हम लोग उस सुखस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के लिए शुद्ध अन्तःकरण से भक्ति विशेष करें।

Aum. god is the Imparter of spiritual knowledge and physical strength. The whole world adores Him whose protection provides emancipation and whose indifference causes all kinds of miseries and death. We should meditate with faith and devotion upon that God.

ओ३म्। यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।। 4 ।। यजु०23 । 3

तूने अपनी अनुपम माया से, जग ज्योति जगाई है,
मनुज और पशुओं को रच कर निज महिमा प्रगटाई है।
अपने हिय सिंहासन पर, श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं,
भक्ति भाव की भेंटें लेकर, तव चरणों में आते हैं।

ओ३म् ही सारे संसार का एक मात्र राजा है। वह ही चर और अचर जगत् का निर्माता है। वह हमारे एक-एक श्वास तथा पलक झपकने तक का मूल कारक है। ओ३म् ही सब जीवों का चाहे दोपाए अथवा चौपाए हों-स्वामी है। हम उस सुखस्वरूप परमात्मा की उपासना करते हैं।

Aum. Oh God ! You are the Sole Ruler of all creation, animate and inanimate, of the very breathing and winking of every living being, bestowing corporal existence on all creatures-biped (like men) and quadrupeds (like the cow). We meditate with faith and devotion upon that God the personification of all bliss.

ओ३म्। येन द्यौरूग्रा पृथिवी च द्रढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।। 5 ।। यजु०32। 6

तारे, रवि, चन्द्रादिक रच कर निज प्रकाश चमकाया है,
धरणी को धारण कर तूने कौशल अलख लखाया है।
तू ही विश्व-विधाता, पोषक, तेरा ही हम ध्यान धरें,
शुद्ध भाव से भगवन्! तेरे, भजनामृत का पान करें।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म् ने उग्र स्वभाव वाले सूर्य और पृथ्वी को धारण किया हुआ है। उस सुखस्वरूप परमात्मा ने दुःख रहित मोक्ष को धारण किया है। वह आकाश में लोक लोकान्तरों को निर्मित कर भ्रमण कराता है। हम लोग उस सुखस्वरूप परम्ब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।

Aum O God, the Sustainer, we adore you with all the strength of our body, mind and soul that Blissful Supreme being, the lord of all our desires, by whom the Sun, the Earth and other planets are regulated and fixed in their respective orbits. You are the fountain-head of all genuine happiness and deliverance and primary cause of millions of planetary systems.

ओ३म्। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ 6॥ ऋ०10।121।10

तुझसे भिन्न न कोई जग में, सब में तू ही समाया है,
जड़-चेतन सब तेरी रचना, तुझ में आश्रय पाया है।
हे सर्वोपरि विभो! विश्व का, तूने साज सजाया है,
हेतु रहित अनुराग दीजिए, यही भक्त को भाया है॥

ओ३म् ही इस संसार का बनाने वाला है। वह ही सबसे महान् है। उस जैसा न तो इस संसार में कोई हुआ है और न ही कभी होगा। जिस जिस पदार्थ की कामना करने वाले हम आपका आश्रय लें और प्रार्थना करें वे सब हमारी कामनाएं पूर्ण हों जिससे हम धन-ऐश्वर्यों के स्वामी बनें।

Aum. O God, the Creator of the Universe, You are the Supreme. No one has ever been equal to You. No one is and no one will be. May the things we desire and for which pray to Thee be ours. May we be lords and protectors of bounteous wealth and other things of the world.

ओ३म्। स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥ 7 ॥ यजु० 32/10

तू गुरू है, प्रजेश भी तू है, पाप-पुण्य फल-दाता है,
तू ही सखा, बन्धु मम तू ही, तुझसे ही सब नाता है।
भक्तों को इस भव-बन्धन से, तू ही मुक्त कराता है,
तू ही अज, अद्वैत, महाप्रभु, सर्वकाल का ज्ञाता है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म् ही हमारा सच्चा और वास्तविक मित्र है। वह ही सकल जगत् का उत्पादक, सम्पूर्ण लोक मात्र के नाम, स्थान, जन्मों को जानने वाला है। सब विद्वान् लोग समस्त सांसारिक इच्छाओं का त्याग कर ज्ञान एवं मोक्ष की प्राप्ति हेतु उसकी उपासना करते हैं।

Aum. God is our real and sincere friend and kinsman. He is the Producer and Disposer of the entire Universe. He knows all the known and unknown worlds and pervades these worlds. All the learned men meditate upon God for the attainment of knowledge and salvation.

ओ३म्। अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम॥8॥ यजु० 40 । 16

तू ही स्वयं प्रकाश रूप प्रभु, सबका सिरजनहार तु ही,
रसना निशि-दिन रटे तुम्हीं को, मन में बसना सदा तु ही।
अद्य-अनर्थ से हमें बचाते रहना, हरदम दया निधान,
अपने भक्त-जनों को भगवन्! दीजे यही विशद वरदान।

ओ३म्। हे अग्निदेव (ईश्वर)। आप स्वप्रकाश स्वरूप एवं ज्ञानमय है। आप हमें ज्ञानमय, धर्ममय सच्चे रास्ते पर ले चलिए ताकि हमसे कुटिलता युक्त पाप रूप कर्म दूर हों। इस कारण हम आपकी बहुत प्रकार की स्तुति और प्रशंसा सदा करते रहें।

Aum. O God ! You are the Self & illuminating, You are Agnidev, the personification of knowledge. Kindly lead us on the path followed by the wise. We pray to Thee to keep us off from crooked and vicious ways so that we may meditate upon you and enjoy prominent bliss.

॥ इतीश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्राः ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

।। अथ स्वस्तिवाचनम् ।।

ओ३म्। अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम् ।।1।।ऋ० 1।1।1

ओ३म्। स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये ।।2।।ऋ० 1।1।9

ओ३म्। स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ।।3।।ऋ० 5।51।12

ओ३म्। स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पति सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ।।4।।ऋ० 5।51।13

ओ३म्। विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रूद्रः पात्वंहसः ।।5।।ऋ० 5।51।13

ओ३म्। स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ।।6।।ऋ० 5।51।14

ओ३म्। स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ।।7।।ऋ० 5।51।15

ओ३म्। ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।8।।ऋ० 7।35।15

ओ३म्। येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।
उक्थशुष्मान्वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदा स्वस्तये ।।9।।ऋ० 10।63।3

ओ३म्। नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ।।10।।ऋ० 10।63।4

ओ३म्। सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्।
ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ।।11।।ऋ० 10।63।5

ओ३म्। को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन।
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ।।12।।ऋ० 10।63।6

ओ३म्। येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ॥13॥ ऋ० 10।63।7

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म्। य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ।।14।।ऋ०10।63।8

ओ३म्। भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेंऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्।
अग्निं मित्रं वरूणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ।।15।।ऋ०10।63।9

ओ३म्। सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्त्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ।।16।।ऋ०10।63।10

ओ३म्। विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम श्रृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ।।17।।ऋ०10।63।11

ओ३म्। अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः।
आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरूणः शर्म यच्छता स्वस्तये ।।18।। ऋ० 10। 63 । 12

ओ३म्। अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विंश्वानि दुरिता स्तस्तये ।।19।।ऋ०10।63।13

ओ३म्। यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ।।20।।ऋ०10।63।14

ओ३म्। स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरूतो दधातन ।।21।।ऋ०10।63।15

ओ३म्। स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति।
सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ।।22।।ऋ०10।63।16

ओ३म्। इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय
कर्मणऽदआप्यायध्वमध्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत
माघशँसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि। ।।23।। यजु०1।1

ओ३म्। आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु
विश्वतोऽब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्
वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ।।24।।यजु०25।14

ओ३म्। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाँ रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानाँ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।।25।। यजु० 25।15

ओ३म्। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियग्ँजिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।।26।। यजु०25।18

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म्। स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।27।।यजु०25।19

ओ३म्। भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।।28।।यजु०25।21

ओ३म्। अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि ।।29।।

ओ३म्। त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः।
देवेभिर्मानुषे जने ।।30।। साम०पू०1।1।1-2

ओ३म्। ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ।।31।। अथर्व० 1।1।1

॥ इति स्वस्तिवाचनम् ॥

धर्म के लक्षण

धृतिक्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीः विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।। मनुस्मृति

(1) धीरज रखना, (2) माफ करना, (3) मन को काबू में रखना, (4) चोरी न करना, (5) सफाई रखना, (6) इन्द्रियों को जीत लेना, (7) बुद्धि को बढ़ाना, (8) विद्या पाना, (9) सच बोलना, (10) क्रोध न करना--ये धर्म के दस नियम हैं।

(1) Patience, (2) Forgiveness, (3) Control of the mind. (4) Non-stealing, (5) Cleanliness, (6) Control of Sense, (7) Intellectual Evolution-Wisdom, (8) Acquisition of Education, (9) Truthfulness, (10) Absence of Anger-Love for All: are the ten signs of Dharma.

सनातन धर्म

सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः।। मनुस्मृति।

सदा सत्य बोले, मीठे वचन बोले, सत्य परन्तु कड़वे वचन न बोले।
प्रिय लगने वाली झूठ बात न कहे। यही सनातन धर्म है।

Always speak the truth, speak sweetly, Speak the truth but not with bitterness. Do not tell lies which are appealing. This is Sanatan Dharma.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

॥ अथ शान्तिकरणम्॥

ओ३म्। शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥1॥
ऋ० 7।35।1

ओ३म्। शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तुं रायः।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरूजातो अस्तु ॥2॥
ऋ० 7।35। 2

ओ३म्। शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तुं शं न उरूची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहावानि सन्तु ॥3॥
ऋ०7।35।3

ओ३म्। शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरूणावश्विना शम्।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः॥4॥
ऋ०7।35।4

ओ३म्। शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ॥5॥
ऋ०7।35।5

ओ३म्। शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः।
शं नो रूद्रो रूद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह श्रृणोतु ॥6॥
ऋ०7।35।6

ओ३म्। शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ॥7॥
ऋ०7।35।7

ओ३म्। शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्त्रः प्रदिशो भवन्तु।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥8॥
ऋ०7।35।8

ओ३म्। शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥9॥
ऋ०7।35।9

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म्। शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ।।10।।
ऋ०7।35।10

ओ३म्। शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ।।11।।
ऋ०7।35।11

ओ३म्। शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ।।12।।
ऋ०7।35।12

ओ३म्। शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः।
शं नो अपां नपात्पेरूरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ।।13।।
ऋ०7।35।13

ओ३म्। इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ।।14।।
यजु० 36।8

ओ३म्। शन्नो वातः पवतां शन्नस्तपतु सूर्य्यः।
शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभि वर्षतु ।।15।।
यजु० 36।10

ओ3म्। अहानि शम्भवन्तु नः शं रात्रीः प्रति धीयताम्।
शन्न इनद्राग्नी भवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरूणा रातहव्या।
शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शँयोः ।।16।।
यजु० 36।11

ओ3म्। शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः ।।17।।
यजु० 36।12

ओ३म्। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः
सर्वं शान्तिरेधि शान्तिरेव शान्तिः सा मा ।।18।।
यजु० 36।17

ओ3म्। तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम
शरदः शतँश्रृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः
स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ।।19।।
यजु० 36।24

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म्। यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमञ्ज्योतिषां ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।20।।
यजु० 34।1

ओ3म्। येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्व यक्षमन्तः प्रजानान्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।21।।
यजु० 34।3

ओ3म्। यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।22।।
यजु० 34।3

ओ३म्। येनेदम्भूतं भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।23।।
यजु० 34।4

ओ३म्। यस्मिन्नृचः साम यजूणषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिंश्चित्तँ सर्वमोतम्प्रजानान्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।24।।
यजु० 34।6

ओ३म्। सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।25।।
यजु० 34।6

ओ३म्। स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते।
शं राजन्नोषधीभ्यः ।।26।।
साम० उत्तरा० 1।1।3

ओ३म्। अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ।।27।। अथर्व० 19।15।5

ओ३म्। अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ।।28।। आर्वि० 19।15।6

।। इति शान्तिकरणम् ।।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

संकल्पोच्चारणम् (ऋत्विग्वरणम्)

यजमान : ओ३म् आवसोः सदने सीद। पुरोहितः-ओ३म् सीदाभि।

यजमान : ओ३म् तत्सत् अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्द्धे वैवस्वतमन्वन्तरे ऽष्टाविंशतितमे
कलियुगे कलि प्रथम चरणे-कलि संवसरे-विक्रमाब्दे-अयने-ऋतौ-मासे-पक्षे-तिथौ-दिवसे-नक्षत्रे-लग्ने-मुहूर्ते-राष्ट्रे-राज्ये-जपनदे-ग्राम/नगरे-स्थाने-गोत्रोत्पन्न-नामहम्-कर्मकरणाय भवन्तं वृणे। पुरोहित : ओ३म् वृतोऽस्मि।

शुचि-प्रदीप प्रज्वलित करने का मन्त्र

ओ३म् यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिन्लोके स्वर्हितम्।
तस्मिनमां धेहि पवमानऽमृते लोके अक्षित इन्द्रायेन्दो परिस्रव॥ ऋ० 9।13।7

हे पवमान सबको पवित्र करने वाले ज्योतिर्मय प्रभु! तेरी ज्योति अखण्ड है। जिस लोक में सदा सुख बना रहता है उस अमृतलोक में मुझे रख। हे परम दयालु परमेश्वर! आप इस आत्मा के लिये सब ओर से सुखों की वर्षा कीजिये।

(दीपक, ईशान-कोण जहाँ पूर्व और उत्तर दिशा मिलते हैं, में रखे हुए घड़े के ऊपर रखा जाए।)

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम, दुःखियों के कष्ट हरता तू॥
तेरा महान् तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु वस्तु में, तू हो रहा है विद्यमान॥
तेरा ही धरते ध्यान हम, मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला॥
दाता हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(अथ देवयज्ञः अग्निहोत्र-हवन)

॥ अथ आचमनमन्त्राः॥

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा॥- तैत्तिरीयारण्य॰ 1/32
ओ३म्। हे अविनाशी प्रभु! आप ही मेरे आधार हैं। यह जल हमारे लिये सुखदायक हो जो सब का आधार भूत है। (पहला आचमन आत्मा की शान्ति के लिए)
Aum. O Immortal God! Thou art my sustainer and shelter.

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा। तैत्ति॰ 1/33
ओ३म्। हे अविनाशी प्रभु! आप ही मेरे रक्षक हैं। आप विश्व के धारक और पोषक हैं। हमारा भी पालन पोषण कीजिए। (दूसरा आचमन मानसिक शान्ति के लिए)
Aum. O Immortal Lord! Thou art my protector.

ओ३म्। सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।-तैत्ति॰1/34
ओ३म्। हे अविनाशी प्रभु! मैं सत्य, कीर्त्ति और सबको आश्रय देनेवाली श्री को प्राप्त करूं। मेरी प्रार्थना सत्य एवं पूर्ण हो। (तीसरा आचमन शारीरिक शान्ति के लिए)
Aum. O God, may I live under your protection, attain truth, good name, prosperity and spiritual distinctions for own as well other's good. May this prayer of mine come true.

॥ अङ्गस्पर्शमन्त्राः॥

ओ३म् वाङ्म आस्येऽस्तु।
ओ३म्। हे सर्व शक्तिमन्। आपकी कृपा से मेरे मुख में वाक् शक्ति अर्थात् अच्छा एवं मीठा बोलने की शक्ति बनी रहे।
Aum. Oh Almighty God, by Thy grace may my tongue be ever blessed with good speech.

ओ३म् नसोर्मे प्राणोऽस्तु॥ (इस मन्त्र से नासिका के दोनों छिद्र)
ओ३म्। हे प्रभो! आपकी कृपा से मेरी नासिका में प्राण शक्ति बनी रहे।
Aum Oh Almighty God, by Thy grace may my nostrils be blessed with good breathing.

ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु॥ (इस मन्त्र से दोनों आँखें)
ओ३म् हे प्रभो! मेरी आँखों में दृष्टि (नेत्र) की शक्ति बनी रहे।
Aum. O God, bless my eyes with perfect power of vision.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु॥ (इस मन्त्र से दोनों कान)
ओ३म्। हे प्रभो! मेरे कानों मे श्रवण शक्ति बनी रहे।
Aum. Oh Almighty God, by Thy grace may my ears be blessed with good hearing.

ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु। (इस मन्त्र से दोनों बाहु)
ओ३म्। हे प्रभु! मेरी भुजाओं में बल शक्ति बनी रहे।
Aum. O God bless my arms with good strength.

ओ३म् ऊर्वोर्मऽ ओजोऽस्तु। (इस मन्त्र से दोनों जंघा)
ओ३म् हे प्रभु! मेरी जंघाओं में सामर्थ्य बना नहे।
Aum. O God bless my legs with good strength.

ओ३म् अरिष्टानि मेऽङगानि तनूस्तन्वा में सह सन्तु॥ (इस मन्त्र से सारे शरीर पर मार्जन करें)
ओ३म् हे प्रभु! आपकी कृपा से मेरें शरीर के अंग प्रत्यंग रोग रहित हों और मेरा शरीर पूर्णतया स्वस्थ हो।
Aum. O' God, may these and all other limbs of my body be free of sickness and grant sound health.

॥ अग्न्याधानम् ॥

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। गोभिल गृह्य० 1 । 1 । 11
ओ३म्। प्रभु प्राण स्वरूप, दुःख विनाशक और सुखों की वर्षा करने वाला है।
Aum. Oh, life-breath of all, the Dispeller of miseries and imparter of bliss.

ओ३म् भूर्भुवः स्वद्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे॥ यजु० 3 । 5

हे प्रभु! आप द्वारा निर्मित इस पृथ्वी पर जहाँ सब विद्वान् लोग यज्ञ किया करते हैं, मैं अग्नि का आधान कर रहा हूँ ताकि मुझे अन्नादि ऐश्वर्य की प्राप्ति हो और मैं भी प्राणस्वरूप, दुःख विनाशक और सुख स्वरूप बन सकूँ। साथ ही मेरा हृदय द्युलोक सा विशाल और पृथ्वी सदृश धैर्य युक्त और श्रेष्ठ हो।

Aum. Oh giver of life i,e. life breath of all, the dispeller of miseries and the Bestower of happiness. I kindle sacrificial fire on this land on which the virtuous people perform sacrifices and do good deeds, praying that I may be blessed with food and prosperity. May my heart be as great as this earth.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म् उद् बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सँसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥ यजु० 15 । 54

ओ३म्। हे अग्नि! तू अच्छी तरह से प्रदीप्त हो। तुम्हारी सहायता से यजमान यज्ञादि तथा लोकोपकार के कार्यों को करने के लिए उत्कृष्ट स्थान पर जहाँ ऊँच नीच का भाव समाप्त हो जाता है, तुम सब लोग बैठो।

Aum. Oh Agni, please blaze well and rise high. May Yajmana, the performer, the host with your help, be able to perform all sacrificial duties and serve humanity. May this performer and other enlightened people sit together on this holy stage irrespective of their social status.

॥ समिदाधान-मन्त्रः॥

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इमग्नये जातवेदसे-इदन्न मम ॥1॥

ओ३म्। समस्त पदार्थों में विद्यमान अग्ने। यह आत्मा तुम्हारी समिधा है जैस यह जलकर प्रकाश एवं उष्णता देती है वैसे मैं भी सत्यज्ञान और प्रकाश सारे संसार में फैलाऊं। हे सर्वज्ञ अग्निदेव! आप हमें अन्न, धन, सन्तान, पशु एवं ब्रह्मवर्चस से समृद्ध कीजिए। यह आहुति सर्वज्ञ जातवेदा अग्नि के लिए है। यह सब आपका ही है, मेरा कुछ नहीं।

Aum. Oh Almighty God, just as Samidha (Wood) is fuel for fire this Atma (Soul) is your fuel. O Agni, blaze brighter and brighter and bless us with worthy offspring with good cattle and animals, with divine glory, plentiful food and spiritual advancement. This oblation is for Agni–the Jatavaydas the knower of every thing and this is not mine, it belongs to God.

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा॥ इदमग्नये- इनन्न मम॥
इससे और
ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे- इदन्न मम॥
यजु० 3 । 1 । 2

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म्। हे यजमान! जैसे आप घर आये अतिथि को प्रेम और आदर से सेवा सत्कार करते हो वैसे ही आप समिधा और घी से इस अग्नि का स्वागत कीजिए। तुम अच्छे द्रव्यों की आहुति दो।

जब अग्नि पूर्ण रूपेण प्रदीप्त हो जाये तो इसमें अच्छी तरह तपाए हुए घी की आहुतियाँ दीजिए। ये आहुतियाँ ज्ञान स्वरूप अग्नि देव के लिए हैं। इनमें मेरा कोई स्वार्थ अथवा स्वत्व नहीं है।

Aum. Oh Yajman welcome Agani with Samidha and ghee as you welcome unexpected guests with hospitality. This oblation is for Agni which pervades everything. This is not mine, it is yours.

ओ३म् तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा।। इदमग्नयेऽङ्गिरसे-इदन्न मम।।
यजु० 3। 3

ओ३म्। हे समस्त पदार्थों का संश्लेषण एवं विश्लेषण करने में समर्थ अग्निदेव! तुम सब पदार्थों में विद्यमान रहकर सबको गति दे रहे हो। इन आहुतियों से मेरा कोई स्वार्थ नहीं, ये सब परमात्मा के लिए हैं।

Aum. Oh all-pervading Agni, we offer you oblations of wood and ghee to enable you to grow further and further. You are most helpful in joinning and disjoining objects and setting them into motion. This oblation is for Agni, the motive power and not for myself.

।। पञ्च घृताहुतयः।।

निम्न मन्त्र से पाँच घृत-आहुतियाँ दें। एक एक बार मन्त्र को बोलकर एक एक आहुति-

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।। इदमग्नये जातवेदसे-इदन्न मम।। आश्व० गृह्य० 1। 10 । 12

ओ३म् समस्त पदार्थों में विद्यमान अग्ने! यह आत्मा तुम्हारी समिधा है जैसे यह जल कर प्रकाश एवं उष्णता देती है वैसे मैं भी सत्य, ज्ञान और प्रकाश सारे

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

संसार में फैलाऊं। हे सर्वज्ञ अग्निदेव! आप हमें अन्न, धन, सन्तान, पशु एवं ब्रह्मवर्चस् ज्ञान से समृद्ध कीजिए। यह आहुति सर्वज्ञ जातवेदा अग्नि के लिए है। यह सब आपका ही है, मेरा कुछ नहीं।

Aum. Oh Almighty God, just as Samidha (Wood) is fuel for fire this Atma (Soul) is your fuel. O Agni, blaze brighter and brighter and bless us with worthy offspring with good cattle and animals, with divine glory, plentiful food and spiritual advancement. This oblation is for Agni–the Jatavaydas the knower of every thing and this is not mine, it belongs to God.

।। जल-प्रसेंचन-मन्त्राः।।

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व।। गोभि० गृह्य० 1।3।1

इस मन्त्र से पूर्व दिशा में जल छिड़कें।

ओ३म्। हे अखण्ड ज्ञानमय परमात्मन्! हमारी प्रार्थना स्वीकार कीजिए।

Aum. O Unimpairable Almighty God! Accede to our request.

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व।।-गोभि० गृह्य०1।3।2

इस मन्त्र से पश्चिम दिशा में जल छिड़के।

ओ३म्। हे दयालु इन्द्र हमारे ऊपर दया दृष्टि रखें।

Aum. O Favourable God! Listen to our prayers.

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व।। गोभि० गृह्य० 1।3।3

इस मन्त्र से उत्तर दिशा में जल छिड़कें।

ओ३म्। हे सरस्वति! हमारी प्रार्थनाएं सुनिए।

Aum. Oh All-knowledge Almighty God! Kindly accede to our request.

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।।
यजु० 30।1

ओ३म्। हे सकल जगत्-उत्पादक, वेदवाणी के स्रोत, बुद्धि को पवित्र करने वाले वाणी के रक्षक प्रभु! हमारी बुद्धियों को पवित्र कीजिए तथा हमारी वाणी को मधुर बनाइये।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

Aum. Oh Almighty God! Creator of the Universe, the Purifier of man's mind, and may the Protector of the Eternal Vedic Law, enable us to realise fully in our lives the truth of this Holy Vedic Speech. Kindly bestow sweetness in our speech.

॥ आघारावाज्याहुतिमन्त्राः॥

ओ३म् अग्नये स्वाहा॥ इदमग्नये- इदन्न मम॥-यजु० 10।5

इस मन्त्र से वेदी के उत्तर भाग में अग्नि में आहुति दें।

ओ३म्। हे अग्नि! मैं आपका आहवान करता हूँ।

यह आहुति अग्नि के लिए है। मेरा कुछ नहीं।

Aum. Oh Agni, I offer these oblations for you. This is not mine, it is wholly for you.

ओ३म् सोमाय स्वाहा॥ इदं सोमाय-इदन्न मम॥

यजु० 10।5

ओ३म्। हे सोमदेव! मैं आपके लिए आहुति के रूप में समर्पण करता हूँ। यह सब आपके लिए है, मेरा इसमें कुछ नहीं।

Aum. I call upon Soma. These oblations are for you and nothing for myself.

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा॥ इदं प्रजापतये- इदन्न मम॥

यजु० 22।32

ओ३म्। मैं प्रजापति परमेश्वर को आहुतियों के रूप में अपना सब कुछ समर्पित करता हूँ। सब कुछ तो आपका ही दिया हुआ है मेरा तो कुछ नहीं।

Aum. Oh Prajapati, the Creator of the Universe. This oblation is for you only and nothing for myself.

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा॥ इदमिन्द्राय- इदन्न मम॥

यजु० 22।6

ओ३म्। हे इन्द्रदेव! मैं आपका आह्वान करता हूँ यह आपके लिए है। मेरे लिए नहीं है।

Aum. I call upon Indra, the Master of all power and self. This oblation is not for me, everything belongs to you, Indra.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(विशेषयज्ञ-मन्त्राः)

॥ व्याहृत्याहुति-मन्त्राः॥

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा॥ इदमग्नये-इदन्न मम॥
ओ३म्। मैं प्राणाधार अग्निदेव के लिए आहुति समर्पित करता हूँ। यह मेरे लिए नहीं।
Aum. Oh Agni, the imparter of life. This oblation is for Agni and not for me. Everything belongs to you.

ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा॥ इदं वायवे- इदन्न मम॥

ओ३म्। हे गतिशील प्रभु! यह आहुति वायु के लिए अर्पित करता हूँ। यह आहुति वायु के लिए है मेरे लिए नहीं।

Aum. I call upon Vayu, the shedder of miseries. This oblation is for Vayu. Whatever I offer is for You only and nothing for myself.

ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा॥ इदमादित्याय-इदन्न मम॥
ओ३म्। मैं आनन्दस्वरूप सुखदाता आदित्य देव का आह्वान करता हूँ। यह आहुति आदित्य के लिए है। मेरा तो कुछ भी नहीं। सब कुछ तो आपका है।
Aum. Oh Aditya, the giver of happiness! This oblation is for you. This is not mine, this belongs to you.

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा॥
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः-इदन्न मम॥

ओ३म्। हे भूः भुवः स्वः स्वरूप देव। मैं फिर तीनों लोकों के लिए आहुति देता हूँ। यह आहुति त्रिलोकी अर्थात् अग्नि, वायु एवं आदित्य के लिए है। मेरा अपना तो कुछ नहीं। सब कुछ तो प्रभु का है।

Aum. I call upon Agni, Vayu and Aditya for long life, perfect happiness and riches respectively, what I offer is for all of you only and nothing for myself.

॥ स्विष्टकृदाहुतिः॥

ये चार घी की आहुति देकर निम्न मन्त्र से स्विष्टकृत् होमाहुति दें। यह एक ही है। यह घृत की अथवा भात की देनी चाहिए।

ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

कामानां समदर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।।
इदमग्नये स्विष्टकृते-इदन्न मम।।

ओ३म्। हे ज्ञानस्वरूप प्रभु! आप इस यज्ञ से सम्बन्धित मेरी सभी मनोकामनाओं को जानते हैं, कृपया उन्हें पूरा कीजिए। मैंने यज्ञ कर्म में जो कुछ भी विधि से अधिक या न्यून किया जो, वह दयालु परमात्मा उसे पूर्ण कर दें। जो कुछ भी है उसे स्वीकार कीजिए। यह आहुति अग्नि स्वरूप प्रभु के लिए है। यह सब कुछ जो मेरे पास है, वह आपको ही समर्पित है, और इसमें मेरा कुछ नहीं।

Aum. Oh all-knowing God, fulfiller of all noble desires, you know all what I seek. Please fulfil them. Please accept the offerings which I have offered you reverently. Please condone whatever excess or shortcoming there may have been in this Yajya. Make this Yajya a success. You are the destroyer of all evils and bestower of goodness in mankind. O Agni, the fulfiller of all wishes, this oblation is for you. This is not mine, it belongs to you.

।। प्राजापत्याहुतिमन्त्रः ।।

निम्नलिखित मन्त्र को मन में बोलकर प्राजापत्याहुति दें-

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा।। इदं प्रजापतये-इदन्न मम।।

ओ३म्। प्रजापति परमेश्वर का आह्वान करता हूँ यह आहुति प्रजापति को समर्पित है। मेरा तो अपना कुछ नहीं।

Aum. Oh Prajapati, the Supreme Lord ! I call upon you. This oblation is thine and Thine only. Nothing is mine here.

।। पवमानाहुतयः ।।

अग्रिम मन्त्रों से चार घृताहुति देवें-

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः।
आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय-इदन्न मम।। ऋ० 9। 66 । 19

ओ३म्। हे प्राणाधार, दुखविनाशक और सुखों की वर्षा करने वाले प्रभु! आप हमारी आयुओं को पवित्र करो, ऐश्वर्य तथा शक्ति प्रदान करो, हमारे अवगुणों और दुर्दिनों को दूर करो। यह परम पुनीत शान्तिदायक अग्नि देव के लिए आहुति है मेरी नहीं।

Aum. God is the very breath of life, the shedder of miseries and the Bestower of happiness, O God, bestow upon life and vigour save us from distresses, calamaties and mishaps. This is my

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

earnest prayer. I offer this oblation to Agni, the Giver of peace. This is Thine and Thine only. Nothing is mine here.

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय-इदन्न मम।। ऋ० 9।66।20

ओ३म्। हे प्राणप्रद, दुःखहर्ता और सुख दाता पवमान अग्निदेव! आप सबको पवित्र करने वाले हो, आप हमारे पुरोहित-अग्रणी हो। आप न्यायकारी और सत्य स्वरूप हो। हे शान्ति एवं न्याय के देव अग्नि मैं यह आहुति आपको समर्पित करता हूँ। इसमें मेरा कुछ भी नहीं।

Aum. God is the cause of life, the dispeller of all miseries and doer of good deeds. Oh God, you are the Supreme Lord who loves righteousness and justice. You are our guide. I offer this oblation to Agni, the source of peace and justice. This oblation is purely for you and does not belong to me.

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय- इदन्न मम।। ऋ० 9।66।21

ओ३म्। हे सर्वाधार दुःख विनाशक, सुखस्वरूप, प्रकाशमय प्रभो। आप हम पर सर्वदा प्यार और दया का हाथ रखिए। आप हमें पवित्र कर बल और ओज प्रदान कीजिए। आप हमें धन, ऐश्वर्य और शारीरिक सुख दीजिए। मैं यह आहुति शान्तिदायक अग्निदेव को देता हूँ। सब कुछ तो आप का ही है। मेरा कुछ भी नहीं।

Aum. God is the giver of life, the Remover of miseries, and the Giver of happiness. O God, may you rule over us in love and kindness. Purify us, give us strength and energy. Bless us with all kinds of riches and vigour. I offer this oblation to Agni, the source of peace. This is for you and not for me.

ओं भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा।। इदं प्रजापतये-इदन्न मम।। ऋ० 10।121।10

ओ३म्। प्रभु जीवनदाता, दुखों का नाश करने वाला और सुखों की वर्षा करने वाला है। हे प्रजा के स्वामी! आप से भिन्न दूसरा कोई इन सब उत्पन्न हुए जड़, चेतनादि जगत् को बनाने हारा और व्यापक नहीं है। आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले हम आपका आश्रय लें, वह सब हमारी कामनाएं पूर्ण हों। हम ऐश्वर्य के स्वामी बनें।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

Aum. God is the giver of life, the Dispeller of miseries, and fount-source of happiness. O God, Lord of all creatures, none other than thou excels all these and other created things. Thou art above all, Thou art supreme. May you fulfil all our cherished desires and may we become masters of bounteous wealth and other material things of the world. This oblation is for Prajapati, the Lord of the universe. This oblation is for you and not for me.

॥ अष्टाज्याहुतयः ॥

निम्नलिखित मन्त्रों से सर्वत्र मगंल कार्यों में आठ आज्याहुतियाँ दें-

ओ३म् त्वं नोऽअग्ने वरूणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।
इदमग्नीवरुणाभ्याम्-इदन्न मम॥ ऋ० 4।1।14

ओ३म्। हे प्रकाश स्वरूप अग्निदेव! आप हमको विद्वानों के अनादर से दूर रहने की प्रेरणा दीजिए। विद्वानों और आदरणीयों में आप सर्वोत्तम हैं। हमारे हृदयों से समस्त वैर-द्वेष घृणा आदि दूर कीजिए। यह आहुति अग्नि और वरूण देव के लिए है, मेरी नहीं है।

Aum. O Agni Dev, you know everything, kindly grant us knowledge that we may not dishonour any respectful and enlightened scholar. Thou art most honourable. Please drive away all ill-feelings from our minds. This oblation is for Agni and Varuna, both and not for myself.

ओ३म् स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्व नो वरूणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा॥
इदमग्नीवरूणाभ्याम्-इदन्न मम॥2 ऋ० 4।1।15

ओ३म्। हे सर्वरक्षक, सब सुखों के दाता। आप हमारे रक्षक बनिये। उषः काल में आप हमारे बहुत ही पास हैं। हमें ऐसी बुद्धि प्रदान कीजिए कि हम सर्वदा विद्वानों का संग करें। यह आहुति अग्नि एवं वरुण देव के लिए है। मेरा कुछ भी नहीं, सब कुछ प्रभु का ही तो है।

Aum. O shining-God !, protect us with all means of protection. You are very near to us in this ceremony. Accept this offering. Grant us intelligence so that we may remain in the company of the enlightened. This oblation is for Agni and Varun and not for myself.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय।
त्वामवस्युरा चके स्वाहा।। इदं वरुणाय-इदन्न मम।।3।। ऋ० 1।25।19

ओ३म्। हे वरूण देव! आप मेरी पुकार को सुनो और मुझे सुखी करो, मैं आपसे रक्षा चाहता हुआ आपको सच्चे दिल से पुकार रहा हूँ। यह आहुति वरूण के लिए है मेरी नहीं।

Aum. Oh Lord Varun, listen to my prayer and make me happy to-day. I call upon you for my protection and invoke you from my heart. This oblation is for Varun and not for myself.

ओ३म् तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा।।
इदं वरुणाय-इदन्न मम।।4।। ऋ० 1।24।11

ओ३म्। हे वरणीय प्रभु! वेद मन्त्रों का पाठ करने वाला मैं यही चाहता हूँ कि आपको प्राप्त करूं। यह यजमान भी आप ही को पाना चाहता है। आप हमारी प्रार्थना को अस्वीकार न करें और हमारी आयु को नष्ट न करें। यह हवि वरूण के लिए है, मेरे लिए नहीं।

Aum. Oh Reverable God ! I adore you with these Ved Mantras to attain you. The host of yajya seeks the same. We pray kindly not to decline our prayer and bless our lives. This belongs to You, Varun.

ओ३म् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः।
तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चतु मरूतः स्वर्काः स्वाहा।।
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः-
इदन्न मम।।5।। कात्यायन श्रौत० 25।1।11

ओ३म्। हे वरुण देव! आप संसार के रचियता एवं सर्वव्यापक हो। आप हमें तथा समस्त प्रशंसित विद्वानों को इस संसार के पापों एवं हजारों-लाखों बन्धनों से मुक्त करावें। आप सर्वोपरि हैं। यह सब कुछ जो मेरे पास है, वरुण, विष्णु और मरूद्गण के लिए है मेरा तो अपना कुछ भी नहीं।

Aum. Oh Creator of the universe and Omnipresent God ! May you and the enlightened scholars be kind and gracious enough to free us from hundreds and thousands of worldly hinderances and sins pertaining to Yajyas. Whatever I offer is for Varun, Vishnu and Maruts. This is not mine, everything belongs to you all.

ओ३म् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयाऽअसि।
अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजँस्वाहा।।
इदमग्नये अयसे-इदन्न मम।।6।। कात्यायन श्रौत० 25।1।11

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म्। हे ज्ञानमय सर्वव्यापक प्रभु! हम आपसे अपनी रक्षा की कामना करते हैं और इस यज्ञ की पूर्ण सफलता की आपसे प्रार्थना करते हैं। आप सर्वदा निर्दोषी जनों की रक्षा करते हैं। आप हमें ऐसी बुद्धि एवं शक्ति प्रदान करें ताकि हम पापों रोगों और बुराइयों में न फसें। यह हवि अग्नि देव के लिए है। इसमें मेरा कुछ नहीं है।

Aum. You are Omnipresent and Omniscient. We see your protection and pray to make this Yajya a great success. You always protect innocent and guiltless beings. Kindly provide us with remedial force against sins, sufferings and diseases. This oblation is for you, Agni. This does not belong to me, every-thing belongs to you.

ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।।
इदं वरुणायाऽऽदित्यायाऽदितये च-इदन्न मम ।।7।। ऋ०1।24।15

ओ३म्। हे वरणीय वरुण देव! आप कृपया मेरे सभी बन्धनों को शिथिल कर दें। हम आपके अनुशासन और नियमों में रहते हुए हमेशा निष्पाप और सर्वथा बन्धनमुक्त हो सकें। यह हवि वरूण आदित्य और अदिति के लिए है, मेरे लिए कुछ नहीं।

Aum. O Reverable God Varun! Loosen all our bonds and worldly attachments. May we always remain disciplined so that we may be able to attain liberation. This oblation is for Varun, Aditya and Aditi and not for myself. Everything belongs to you all.

ओ३म् भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ।
या यज्ञँहिंसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा।। इदं जातवेदोभ्याम्-इदन्न मम ।।8।। यजु० 5।3

ओ३म्। हे ज्ञानमय प्रभु! हमारी प्रार्थना है कि सब विद्वान्‌गण मनसा, वाचा कर्मणा एकं हों। आप हमारे यज्ञों में और हमारी उन्नति में सहायता कीजिए यह हवि अग्नि देव एवं विद्वानों के लिए है। सब कुछ प्रभु का है। मेरा अपना तो कुछ नहीं।

Aum. Oh Agni Dev, You are the master of all knowledge. We pray that all the enlightened scholars be united in their thoughts and deeds. May you be helpful and benevolent in our Yajyas. This oblation is for Agni and for the enlightened scholars and not for myself. Everything belongs to Almighty God.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

दैनिक अग्निहोत्र के मन्त्र

॥ प्रातः कालीन होममन्त्राः॥

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा॥ यजु० 3।9

ओ३म्। मैं सूर्य देव का आह्वान करता हूँ, सूर्य रोशनी (ज्ञान) है और रोशनी ही सूर्य है।

Aum. I call upon Soorya. soorya is knowledge and light is Soorya.

ओ३म् सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥ यजु० 3।9

ओ३म्। हम सूर्य भगवान् का आह्वान करते हैं। सूर्य चमक (तेज) है और तेज ही सूर्य है।

Aum. I call upon Soorya. Soorya is glory and splendor and this glory is Soorya.

ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥ यजु० 3।9

ओ३म्। हम सूर्य का आह्वान करते हैं। प्रकाश सूर्य है और सूर्य प्रकाश है।

Aum. We call upon Soorya. Light is Soorya and Soorya is light.

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरूषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा॥ यजु० 3।10

ओ३म्। अपनें दिव्य प्रकाश और प्रेरणा शक्ति के साथ अति सुशोभित उषा की प्रभा के साथ सूर्य नारायण इस आहुति को प्राप्त हों।

Aum. May this sun with dawn accept our oblations and diffuse the fragrance of yajya far and wide.

॥ सायंकालीन-होममन्त्राः॥

निम्न मन्त्रों से सायंकाल में अग्निहोत्र करें-

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा॥1॥ यजु०3।9

ओ३म्। हम अग्निदेव का आह्वान करते हैं। अग्नि प्रकाश है और प्रकाश अग्नि है।

Aum. we call upon Agni. Agni is light and light is Agni.

ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥2॥ यजु० 3।9

ओ३म्। हम अग्नि देव को पुकारते हैं। अग्नि तेज है और तेज ही अग्नि हैं।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

Aum. Oh Agni! You are 'Tejas' and Tejas' is Agni.

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योर्ज्योतिरग्निः स्वाहा॥ 3॥

(इस मन्त्र को मन में उच्चारण करके तीसरी आहुति देनी चाहिए।)

ओ३म्। हे अग्निदेव आप ज्योतिस्वरूप हो। आप की ज्योति ही अग्नि रूप है।

Aum. We call upon Agni. Agni is knowledge and knowledge is Agni.

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या।
जुषाणोऽअग्निर्वेतु स्वाहा ।।4।। यजु० 3।10

ओ३म्। हे अग्निदेव! आप ईश्वर का ही रूप हो। आप अपने दिव्य प्रकाश तथा संसार की उत्पादक तथा प्रेरक शक्ति के साथ चमकती हुई और सुशोभित रात्रि के साथ इस आहुति को प्राप्त होकर इन आहुतियों को सर्वत्र प्रसारित करें।

Aum. Oh the Supreme Light, you are resplendent like the lustrous thermic force in the world. May this thermic force, accept our oblations and diffuse the fragrance of this Yajya to the whole world.

।। प्रातः सायंकालीनमन्त्राः।।

निम्नलिखित मन्त्रों से प्रातः-सायं आहुति देनी चाहिए-

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय-इदन्न मम ।।1।।

ओ३म्। मैं प्राणप्रद संसार रचयिता अग्नि का आह्वान करता हूँ। यह हवि अग्निदेव के लिए है। मेरा इसमें कुछ नहीं।

Aum. I call upon Agni, the creator and life-breath of the universe. This oblation is for Agni. This is not mine, it belongs to you.

ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा।। इदं वायवेऽपानाय-इदन्न मम ।।2।।

ओ३म्। दुःख विनाशक, समस्त संसार को जीवन प्रदान करने वाली वायु की पवित्रता एवं अपान वायु की शुद्धता के लिए मैं वायु देव को यह आहुति देता हूँ। यह मेरे लिए नहीं है।

Aum. I call upon Vayu, the dispeller of sufferings for Apana (intaking breath). This oblation is for you and does not belong to me.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।।
इदमादित्याय व्यानाय-इदन्न मम ।।3।।

ओ३म्। मैं सुखों के दाता आदित्य देव का व्यान के लिए आह्वान करता हूँ। यह आहुति आदित्य और व्यान के लिए है, मेरे लिए नहीं।

Aum. I call upon Aditya, the Bestower of bliss on his devotees for Vyana (out going-breath). This offer is for Aditya only and nothing for myself.

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः-इदन्न मम ।।4।।

ओ३म्। समस्त संसार के जीवन दाता, दुःख हर्ता, सुख दाता, परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए, अनुकूलता तथा प्राण, अपान और व्यान की शुद्धि के लिए यह आहुति है। यह मेरे लिए नहीं।

Aum. I call upon Agni, the Maker, Vayu the Shedder of miseries, and Aditya, the bestower of all bliss for Prana, Apana and Vyana respectively. This offer is for Agni, Vayu and Aditya only and nothing for myself.

ओ३म् आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।।5।।

ओ३म्। जल समान शान्ति दायक, प्रकाश स्वरूप, आनन्द रस के देने वाला, मुक्ति प्रदाता, सबसे महान्, प्राणाधार दुःख नाशक, सुख स्वरूप सर्वरक्षक परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए यह आहुति है।

Aum. I call upon the creator and the preserver of the universe. God is all-pervading. He is the highest source of intelligence. May God protect his devotees.

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।

तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।।6।।

ओ३म्। हे प्रकाश स्वरूप ज्ञान स्वरूप प्रभो। जिस मेधा बुद्धि को विद्वान और पितर लोग प्राप्त करते हैं और उपयोग करते हैं। वही धारणावती बुद्धि मुझे प्रदान कर मेधावी बनाइये। यह मेरी आपसे हार्दिक प्रार्थना है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

Aum. I call upon you, O Agni Grant me that superior discriminating intellect which enlightened ancestors possessed. This is my hearty prayer to Thee.

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रन्तन्न आ सुव स्वाहा।। यजु० 30।3

ओ३म्। हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र, ऐश्वर्य युक्त, शुद्ध स्वरूप सब सुखों के दाता परमेश्वर। आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए ओर जो कल्याणकारक गुण कर्म स्वभाव और पदार्थ हैं, वह हमको प्राप्त कराइये।

Aum. O God Almighty, the Creator of the Universe and Bestower of all happiness. We pray Thee to keep us far from bad habits, vices and calamities and bestow, upon us what is blessed and auspicious.

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम स्वाहा।। यजु० 40।16

ओ३म् हे स्वप्रकाश स्वरूप एवं ज्ञानमय अग्निदेव। आप कृपया हमें उस मार्ग पर ले जाइये जो सच्चे ज्ञान एवं धर्म को जाता है ताकि हम अच्छे कामों से इस संसार की सम्पदा एवं ज्ञान प्राप्त कर सकें। हमारी सब प्रकार की कुटिलताएँ और पाप कर्म दूर कीजिए। हम सर्वदा आपका भजन एवं आपकी उपासना करते हैं।

Aum. O God, the Self-illuminating Agni, the personification of knowledge, kindly lead us on to the right path which leads to real knowledge and worldly riches through righteous acts. Shed away all our crooked ill-feeling and sins. Kindly bestow upon us the intellect which may help us meditating upon you.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

॥ पूर्णाहुतयः॥

स्त्रुवा को घृत से भर भर के निम्नलिखित मन्त्रों से पूर्णाहुति करें-

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते। (ब्राह्मणग्रन्थ)

ओ३म्। यह ब्रह्म पूर्ण है, यह जगत् भी पूर्ण है। पूर्ण ब्रह्म से पूर्ण से पूर्ण प्रकट होता है। पूर्ण की पूर्णता को लेने पर पूर्ण ही शेष रहता है।

Aum. He, the Almighty possessor of perfect power and fully perfect in fulfilling the needs and desires of all the creatures from that Suprem Power emerges the perfect, leaving which, we, the Purna-Pursha remains in the same status and glory.

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा॥1॥

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा॥2॥

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा॥3॥

ओ३म्। ईश्वर की प्रत्येक रचना सत्यतः सम्पूर्ण है।

Aum. Oh God, the world created by you is perfect. You in yourself are absolutely perfect, and every creation of God is perfect.

(यजमान खड़ा होकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए पात्र में बचे हुए घृत को कुण्ड में छोड़ता जाये)

ओ३म् वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥ यजु० 1।3

Aum. Oh Yajna! Thou art the purifier of hundred-streamed and thousand-streamed Vasu–the living Yajman. May the divine holy Sun-power purify air in the atmosphere. The Yajna is in itself pure and a purifier. So, it sustains the whole universe.

आशीर्वचन

ओ३म् ध्रुवासि ध्रुवोऽयंयजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्।
घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया॥ यजु० 5।25

ओ३म्। उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय।
आयुः प्राणं प्रजां पशूम् कीर्तिं यजमानं च वर्धय॥ अथर्व 19।63।1

ओ३म्! अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधना/सन्तु जीवन्तु शरदः शतम्॥

ओ३म्! काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी च शस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितो अस्तु ब्राह्मणा सन्तु निर्भयाः॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection